नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव पास बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तकों एवं परिवर्तित पाठ्यक्रम पर आधारित है।

पास बुक्स में नं. 1

संजीव®

पास बुक्स

अनिवार्य हिन्दी-XI

(कक्षा 11 के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा बोर्ड की website पर जून, 2023 में जारी पूर्णतः नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रमानुसार

- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 320/-

- प्रकाशक :

  संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

  जयपुर-3

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- लेजर कम्पोजिंग :

  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

  आधुनिक बुक बाईन्डर, जयपुर

  ****

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं–

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा बोर्ड की website पर जून, 2023 में जारी नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रम

हिन्दी अनिवार्य कक्षा 11

समय : 3.15 घंटे **पूर्णांक : 100**

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित	12
रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन	25
व्यावहारिक व्याकरण	08
पाठ्यपुस्तक : **आरोह** (भाग-1)	40
पूरक-पुस्तक : **वितान** (भाग-1)	15

1. अपठित : **12**

(i) काव्यांश—10 से 12 पंक्तियाँ : (काव्यांश पर आधारित छह बहुचयनात्मक प्रश्न) 06

(ii) गद्यांश—150 से 200 शब्द : (गद्यांश पर आधारित छह बहुचयनात्मक प्रश्न) 06

2. रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन : **25**

(i) निबन्ध (आधुनिक विषय पर विकल्प सहित) (लगभग 300 शब्द) 06

(ii) कार्यालयी पत्र (विकल्प सहित) 05

(iii) प्रिंट माध्यम के फीचर (समाचार और सम्पादकीय) 05

(iv) प्रतिवेदन/आलेख 05

(v) जनसंचार माध्यम पर आधारित प्रश्न (दो अतिलघूत्तरात्मक एवं एक लघूत्तरात्मक प्रश्न) 04

3. व्यावहारिक व्याकरण : **8**

(i) अविकारी शब्द 02

(ii) शब्द विचार 02

(iii) वाक्यांश के लिए एक शब्द, समानार्थी शब्द 02

(iv) वाक्य विचार 02

4. आरोह (गद्य-भाग–20 अंक, काव्य-भाग–20 अंक) **40**

(गद्य-भाग)

(i) दो में से एक गद्यांश पर आधारित सप्रसंग व्याख्या 04

(ii) पाठों की विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्न (चार अतिलघूत्तरात्मक, तीन लघूत्तरात्मक एवं विकल्प सहित दो दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न) 16

(काव्य-भाग)

(i) दो काव्यांशों में से किसी एक पर सप्रसंग व्याख्या 04

(ii) कविता की विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्न (चार अतिलघूत्तरात्मक, तीन लघूत्तरात्मक एवं विकल्प सहित दो दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न) 16

5. वितान– भाग 1 **15**

(i) पाठों की विषय-वस्तु पर आधारित तीन बहुचयनात्मक, दो अतिलघूत्तरात्मक एवं तीन लघूत्तरात्मक प्रश्न) 11

(ii) विषय-वस्तु पर आधारित दो में से एक निबन्धात्मक प्रश्न 04

निर्धारित पुस्तकें :

1. **आरोह–भाग 1**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **वितान–भाग 1**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति और माध्यम**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

आरोह (भाग-1)

गद्य-खण्ड

1.	नमक का दारोगा	प्रेमचन्द	1 14
2.	मियाँ नसीरुद्दीन	कृष्णा सोबती	15–24
3.	अपू के साथ ढाई साल	सत्यजित राय	24–34
4.	विदाई-संभाषण	बालमुकुंद गुप्त	34–45
5.	गलता लोहा	शेखर जोशी	45–57
6.	रजनी	मन्नू भंडारी	57–69
7.	जामुन का पेड़	कृश्न चंदर	69–81
8.	भारत-माता	जवाहरलाल नेहरू	81–89

काव्य-खण्ड

1.	कबीर	90–94
2.	मीराँ	94–99
3.	भवानी प्रसाद मिश्र	99–111
4.	त्रिलोचन	111–118
5.	दुष्यंत कुमार	118–125
6.	अक्क महादेवी	125–129
7.	अवतार सिंह पाश	129–137
8.	निर्मला पुतुल	137–144

वितान (भाग-1)

1.	भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर	कुमार गंधर्व	145–152
2.	राजस्थान की रजत बूँदें	अनुपम मिश्र	152–160
3.	आलो-आँधारि	बेबी हालदार	160–170
4.	भारतीय कलाएँ		171–178

अपठित

1.	अपठित काव्यांश	179–195
2.	अपठित गद्यांश	195–214

रचना

(i) निबन्ध-लेखन–

1.	इलेक्ट्रिक वाहन : आज की आवश्यकता	215

2. सोशल मीडिया का बढ़ता प्रयोग एवं उसका प्रभाव 216
3. मेक इन इण्डिया **अथवा** स्वदेशी उद्योग 217
4. आत्मनिर्भर भारत 217
5. कोरोना वायरस—21वीं सदी की महामारी
अथवा
कोरोना वायरस महामारी के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव 218
6. शिक्षा का अधिकार **अथवा** अनिवार्य बाल-शिक्षा अधिकार 219
7. नारी-सुरक्षा की महत्ती आवश्यकता **अथवा** महिलाओं में बढ़ती असुरक्षा 220
8. खाद्य पदार्थों में मिलावट और भारतीय समाज
अथवा
मिलावटी माल का बढ़ता कारोबार 221
9. आतंकवाद : एक विश्व समस्या **अथवा** आतंकवाद : एक विश्वव्यापी समस्या
अथवा
आतंकवाद : समस्या एवं समाधान 221
10. रोजगार गारन्टी योजना : मनरेगा **अथवा** नरेगा : गाँवों में रोजगार योजना 222
11. प्लास्टिक थैली : पर्यावरण की दुश्मन
अथवा
प्लास्टिक थैली : क्षणिक लाभ-दीर्घकालीन हानि
अथवा
प्लास्टिक कैरी बैग्स : असाध्य रोगवर्धक 223
12. इन्टरनेट की उपयोगिता **अथवा** इन्टरनेट : ज्ञान का भण्डार
अथवा
विद्यार्थी-जीवन में इन्टरनेट की भूमिका 224
13. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप **अथवा** मोबाइल फोन का प्रचलन एवं प्रभाव 225
14. जल-संरक्षण : हमारा दायित्व **अथवा** जल-संरक्षण की आवश्यकता एवं उपाय 226
15. कन्या-भ्रूण हत्या : एक चिन्तनीय विषय
अथवा
कन्या-भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध 227
16. राजस्थान में बढ़ता जल-संकट 227
17. भारत में सूचना क्रांति का प्रसार 228
18. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 229
19. बाल-विवाह : एक अभिशाप 230

20. बढ़ते हुए फैशन का दुष्प्रभाव 231
21. कम्प्यूटर के बढ़ते कदम और प्रभाव **अथवा** कम्प्यूटर के बढ़ते चरण 231
22. समय का सदुपयोग 232
23. मेरे सामने घटित भीषण दुर्घटना **अथवा** विद्यार्थी जीवन की अविस्मरणीय घटना
अथवा
आँखों देखी वह दुर्घटना 233
24. गुरुजी जिन्हें मैं भुला नहीं सकता **अथवा** मेरे आदरणीय गुरुजी 234
25. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग **अथवा** योग की उपादेयता
अथवा
योग : स्वास्थ्य की कुंजी **अथवा** योग भगाए रोग 234
26. युवाओं में बढ़ती नशे की कुप्रवृत्ति **अथवा** मादक पदार्थ : मौत के द्वार 235
27. जीवन की वह चिरस्मरणीय यात्रा **अथवा** किसी रोचक यात्रा का वर्णन 236
28. अनुशासनपूर्ण जीवन ही वास्तविक जीवन है **अथवा** विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन 237
29. दहेज-प्रथा 238
30. मूल्यवृद्धि : एक ज्वलन्त समस्या **अथवा** बढ़ती महँगाई की मार 239
31. भीषण वर्षा की वह रात **अथवा** जब मेरे गाँव में भीषण वर्षा हुई 240
32. पर्यावरण प्रदूषण **अथवा** बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण : एक समस्या 240
33. त्योहारों का महत्त्व 241
34. दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप 242
35. भ्रष्टाचार : एक विकराल समस्या **अथवा** भ्रष्टाचार और गिरते सांस्कृतिक मूल्य 242
36. मानव के लिए विज्ञान—वरदान या अभिशाप **अथवा** विज्ञान के बढ़ते कदम 243
37. इक्कीसवीं सदी का भारत **अथवा** मेरे सपनों का भारत 244
38. मनोरंजन के आधुनिक साधन 245
39. जनसंख्या की समस्या एवं समाधान 246
40. यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता 246
41. राष्ट्र-निर्माण में युवकों का योगदान 247
42. सर्वशिक्षा अभियान **अथवा** सर्वशिक्षा अभियान को कैसे सफल बनाएँ 248
43. पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक **अथवा** पर्यावरण संरक्षण में विद्यार्थियों का दायित्व
अथवा
पर्यावरण संरक्षण के उपाय 248
44. शिक्षित नारी : सुख-समृद्धिकारी 249
45. कम्प्यूटर शिक्षा का महत्त्व **अथवा** कम्प्यूटर शिक्षा की उपयोगिता 250

46. राजस्थान के लोकगीत 251
47. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन **अथवा** वाहन-वृद्धि से स्वास्थ्य हानि 252
48. नखरालो राजस्थान 252
49. मेरी प्रिय पुस्तक (रामचरितमानस) 253
50. निरक्षरता : एक अभिशाप 254
51. बेरोजगारी : समस्या और समाधान **अथवा** रोजगार के घटते साधन 255
52. राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव 255
53. यदि मैं गाँव का सरपंच होता 256
54. वर्तमान की महती आवश्यकता : राष्ट्रीय एकता **अथवा** राष्ट्रीय एकता

अथवा

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता 257
55. शिक्षा सुधार में विद्यार्थियों की भूमिका 258
56. राजस्थानी संस्कृति 259
57. जीवन में खेलों का महत्त्व 259
58. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता **अथवा** नैतिक शिक्षा का महत्त्व 260
59. समाज-निर्माण में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका **अथवा** समाचार पत्रों का महत्त्व 261

(ii) कार्यालयी पत्र 262-278

(iii) प्रिन्ट माध्यम के फीचर (समाचार और सम्पादकीय) 279-295

(iv) प्रतिवेदन/आलेख 296-309

(v) जनसंचार माध्यम 310-326

व्यावहारिक व्याकरण 327-351

(1) अविकारी शब्द 327-330
(2) शब्द विचार 331-336
(3) वाक्यांश के लिए एक शब्द 336-340
(4) समानार्थी शब्द 340-345
(5) वाक्य विचार 345-351

अनिवार्य हिन्दी–कक्षा-XI
आरोह (भाग-1)
गद्य-खण्ड

1. नमक का दारोगा
(प्रेमचन्द)

लेखक-परिचय–हिन्दी साहित्य के इतिहास में कहानी और उपन्यास की विधा के विकास में प्रेमचन्द का अन्यतम स्थान माना जाता है। इनका जन्म सन् 1880 में उत्तर प्रदेश के वाराणसी के पास लमही नामक ग्राम में हुआ था। बचपन में अभावों से ग्रस्त इस शिखर पुरुष ने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद पारिवारिक समस्याओं के कारण जैसे-तैसे बी.ए. तक की पढ़ाई पूरी की। इन पर गाँधीवादी विचारधारा का गहरा प्रभाव था। सन् 1936 में इस महान् साहित्यकार का निधन हो गया।

रचनाएँ–मुंशी प्रेमचन्द बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न कलाकार थे। इनका वास्तविक नाम धनपतराय था, लेकिन इन्होंने सर्वप्रथम नवाबराय नाम से उर्दू में लिखना प्रारम्भ किया था। इन्होंने तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं, जिनमें 'पंच परमेश्वर', 'पूस की रात', 'कफन' आदि कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। आपके उपन्यासों में 'सेवा सदन', 'प्रेमाश्रम', 'गबन', 'रंगभूमि', 'गोदान', 'कर्मभूमि', 'निर्मला' एवं 'कायाकल्प' ने विशेष ख्याति प्राप्त की है। 'कुछ विचार' एवं 'विविध प्रसंग' इनके निबन्ध-संग्रह और 'कर्बला', 'संग्राम' एवं 'प्रेम की देवी' इनके द्वारा लिखित नाटक हैं।

पाठ-सार

'नमक का दारोगा' कहानी में उस समय का कथानक है, जब नमक पर सरकारी नियन्त्रण था। इस कहानी का सार इस प्रकार है—

1. मुंशी वंशीधर को नौकरी मिलना–जब सरकार द्वारा नमक के व्यापार पर नियन्त्रण किया गया, तो लोग चोरी-छिपे इसका व्यापार करने लगे। तब नमक विभाग में नौकरी पाने के लिए सभी लोग ललचाने लगे। अपनी पढ़ाई समाप्त करके मुंशी वंशीधर नमक विभाग में दारोगा पद पर नियुक्त हो गये। नौकरी पर जाते समय वृद्ध पिता ने आशीर्वाद दिया और ऊपरी आमदनी का ध्यान रखने को कहा।

2. नमक की गाड़ियाँ रोकना–सर्दियों में रात के समय मुंशी वंशीधर सो रहे थे, तभी उन्हें अचानक गाड़ियों की नदी पार करने की ध्वनि सुनाई दी। वे तुरन्त यमुना पर नावों से बने पुल पर आये। उन्होंने दातागंज के प्रसिद्ध व्यापारी पं. अलोपीदीन की नमक की गाड़ियों को देखकर उन्हें रोक दिया।

3. पं. अलोपीदीन की गिरफ्तारी–अलोपीदीन भी एक सजीले रथ पर सवार थे। उन्होंने गाड़ियाँ छोड़ देने की एवज में नमक के दारोगा वंशीधर को रिश्वत देनी चाही और चालीस हजार रुपये देने का प्रस्ताव किया, परन्तु ईमानदार नमक का दारोगा नहीं माना। तब पं. अलोपीदीन को गिरफ्तार कर लिया गया।

4. न्यायालय में पेशी—प्रातः होते ही पं. अलोपीदीन की गिरफ्तारी की खबर सब ओर फैल गई। उसे अदालत में पेश कर मुकदमा प्रारम्भ किया गया। यद्यपि मुंशी वंशीधर ने ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया था, परन्तु पं. अलोपीदीन ने अपने धन के बल पर न्यायालय को अपने पक्ष में करने का पूरा प्रयास किया।

5. अलोपीदीन के पक्ष में फैसला–न्याय के दरबार में धन का नशा छाया हुआ था। इस कारण डिप्टी मजिस्ट्रेट ने अलोपीदीन के विरुद्ध दिये गये प्रमाण असत्य बताकर उसके पक्ष में फैसला दिया। वकीलों ने फैसला सुना तो उछल पड़े। इस बात पर वंशीधर की काफी आलोचना होने लगी तथा अपमानित किया गया।

6. वंशीधर की नौकरी से मुअत्तली–वंशीधर ने धन से वैर लिया था। इसका मूल्य चुकाना जरूरी था। इस कारण एक सप्ताह के अन्दर ही उन्हें नौकरी से मुअत्तली का परवाना मिल गया। कर्त्तव्यपरायणता का ऐसा दण्ड पाकर जब वंशीधर अपने घर पहुँचे, तो वृद्ध पिता को क्रोध आया, वृद्धा माता को दु:ख हुआ और उनकी मनोकामनाएँ मिट्टी में मिल गईं। पत्नी ने भी कई दिनों तक सीधे मुँह बातें नहीं कीं।

7. पं. अलोपीदीन का आगमन–इस प्रकार घर में रहते हुए वंशीधर को अभी एक सप्ताह बीत गया। तब एक दिन सन्ध्या-काल को पं. अलोपीदीन उनके द्वार पर आये। वंशीधर के वृद्ध पिता ने उनकी आगवानी की और लल्लो-चप्पो की बातें कर अपने पुत्र के व्यवहार के लिए खेद जताया। तब अलोपीदीन ने वंशीधर की कर्त्तव्यनिष्ठा की खूब प्रशंसा की।

8. अलोपीदीन का आग्रहपूर्ण प्रस्ताव–वृद्ध पिता के समक्ष अलोपीदीन ने वंशीधर की ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा की प्रशंसा की और कहा कि आज मैं स्वयं आपकी हिरासत में हूँ। मेरा विनम्र आग्रह है कि आप मेरी प्रार्थना अवश्य स्वीकार करें। ऐसा कहकर अलोपीदीन ने एक स्टाम्प लगा हुआ पत्र उनके सामने रखा, जिसे पढ़कर वंशीधर ने कृतज्ञता व्यक्त की। क्योंकि उस पत्र में पं. अलोपीदीन ने मुंशी वंशीधर को अपनी समस्त जायदाद का स्थायी मैनेजर नियत किया था।

9. कर्त्तव्यनिष्ठा की विजय–मुंशी वंशीधर ने अलोपीदीन का आग्रह मानकर वह पद स्वीकार कर कागज पर हस्ताक्षर किये। उस समय वंशीधर की आँखें भक्ति, श्रद्धा एवं कृतज्ञता के कारण डबडबा गईं। कर्त्तव्यनिष्ठा की विजय हुई और अलोपीदीन ने खुशी से उन्हें गले लगा लिया।

कठिन शब्दार्थ–सूत्रपात होना = आरम्भ होना। **पौ-बारह होना** = मजे होना। **बरकंदाजी** = बंदूक लेकर चलने वाला सिपाही, चौकीदार। **ओहदा** = पदवी। **आत्मावलंबन** = अपना सहारा। **सन्नाटा** = चुप्पी। **स्तंभित** = हैरान। **हिरासत** = गिरफ्तारी। **अविचलित** = बिना डगमगाये। **अलौकिक** = इस लोक में न घटने वाला, अद्‌भुत। **कातर** = परेशान, दु:खी। **अमले** = कर्मचारी मंडल, नौकर-चाकर। **तज़वीज़** = राय, निर्णय। **गर्वाग्नि** = गर्व की आग। **कुड़बुड़ाना** = बड़बड़ करना। **पछहिएँ** = पश्चिमी। **ठकुर सुहाती** = मालिक को अच्छी लगने वाली। **बेमुरौवत** = बिना लिहाज।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

पाठ के साथ–

प्रश्न 1. कहानी का कौन-सा पात्र आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?

उत्तर–कहानी का प्रमुख पात्र वंशीधर हमें सबसे अधिक प्रभावित करता है, क्योंकि वह कर्त्तव्यनिष्ठ और ईमानदार दारोगा है। वह नमक जैसे विभाग में नियुक्त होने पर भी चारित्रिक दृढ़ता से भ्रष्टाचार के दलदल में कमल की तरह निर्लिप्त रहता है।

प्रश्न 2. 'नमक का दारोगा' कहानी में पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के कौनसे दो पहलू (पक्ष) उभर कर आते हैं?

उत्तर–कहानी में पं. अलोपीदान के व्यक्तित्व के दो महत्त्वपूर्ण पहलू हमारे सामने उभर कर आते हैं, जो निम्न हैं–

(1) कहानी के आदि से मध्य तक उसका **भ्रष्ट व्यक्तित्व** हमारे सामने आता है। यह धन के बल पर अपने सभी कार्य सिद्ध कर लेता है। अपने भ्रष्ट रूप से वह कोर्ट-कचहरी आदि में सभी को प्रभावित करता है और उसी के बल पर वह धन कमाता है।

(2) कहानी के अन्त में वह **गुणग्राही व्यक्ति** के रूप में हमारे सामने आता है। वह अपने को गिरफ्तार करने वाले वंशीधर की कर्त्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी से प्रभावित होकर उसे आदरपूर्वक अपनी सारी सम्पत्ति का स्थायी मैनेजर नियुक्त कर देता है।

प्रश्न 3. कहानी के लगभग सभी पात्र समाज की किसी न किसी सच्चाई को उजागर करते हैं। अग्रलिखित पात्रों के संदर्भ में पाठ के उस अंश को उद्‌धृत करते हुए बताइए कि ये समाज की किस सच्चाई को उजागर करते हैं–

(क) वृद्ध मुंशी (ख) वकील (ग) शहर की भीड़।

उत्तर–(क) वृद्ध मुंशी–वृद्ध मुंशी के चरित्र से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का परिचय मिलता है। वह नौकरी की तलाश में जाते समय अपने पुत्र वंशीधर को रिश्वतखोरी या ऊपरी आय के बारे में खुलकर बताते हैं और कहते हैं कि ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। ''नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए।'' ''मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है·····ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है।·····गरज वाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ ही होता है।·····इन बातों को निगाह में बाँध लो। यह मेरी जन्मभर की कमाई है।''

(ख) वकील–वकीलों के माध्यम से यह उजागर हुआ है कि वकीलों का मुख्य लक्ष्य धन कमाना रह गया है। वे पैसा कमाने के लिए धन वालों का ही साथ देते हैं। न्याय और अन्याय से उनका कोई सरोकार नहीं रहता है। इतना ही नहीं, जब नमक पर पाबंदी लगी और नमक के दारोगा का पद महत्त्वपूर्ण हो गया तो सभी वकील लोभवश यही चाहने लगे कि वे वकालत छोड़कर इस विभाग के दारोगा बन जाएँ।

पं. अलोपीदीन की पैरवी करने कई वकील आगे आये और उनके पक्ष में मजिस्ट्रेट का फैसला सुनकर प्रसन्न हो उठे, यथा—''वकीलों ने यह फैसला सुना और उछल पड़े।''

(ग) शहर की भीड़–शहर की भीड़ के माध्यम से यह उजागर हुआ है कि शहरवासियों को दूसरे के सुख-दुःख से कोई सरोकार नहीं है। आम जनता को मनोरंजन के लिए कोई न कोई मौका चाहिए। इतना ही नहीं, शहरवासी स्वयं भी भ्रष्ट आचरण में लिप्त होते हैं फिर भी किसी भ्रष्टाचारी की कलई खुलने पर उसे भला-बुरा कहने में और अपने आप को पवित्र कहने में नहीं चूकते। उदाहरण के लिए—

"जब दूसरे दिन पंडित अलोपीदीन अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ हाथों में हथकड़ियाँ, हृदय में ग्लानि और क्षोभ भरे, लज्जा से गरदन झुकाए, अदालत की तरफ चले, तो सारे शहर में हलचल मच गई। मेलों में कदाचित् आँखें इतनी व्यग्र न होती होंगी। भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा।"

प्रश्न 4. निम्न पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए–''नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती है। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान् हो, तुम्हें क्या समझाऊँ।''

(क) यह किसकी उक्ति है?

(ख) मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद क्यों कहा गया है?

(ग) क्या आप एक पिता के वक्तव्य से सहमत हैं?

उत्तर–(क) यह उक्ति वंशीधर के वृद्ध पिता मुंशीजी की है।

(ख) नौकरी से मिलने वाला मासिक वेतन तो पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान महीने में एक बार ही दिखाई देता है। जिस प्रकार पूर्णमासी का चाँद धीरे-धीरे घटते हुए लुप्त हो जाता है, उसी प्रकार प्राप्त वेतन भी महीने के अन्त तक समाप्त हो जाता है। इसलिए मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद कहा गया है।

(ग) पिता के इस वक्तव्य से हम सहमत नहीं हैं, क्योंकि एक पिता को कभी भी अपने पुत्र को भ्रष्ट-आचरण की शिक्षा नहीं देनी चाहिए।

प्रश्न 5. 'नमक का दारोगा' कहानी के कोई दो अन्य शीर्षक बताते हुए उसके आधार को भी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'नमक का दारोगा' कहानी के हमारी दृष्टि से अन्य दो शीर्षक हो सकते हैं—(1) ईमानदार दारोगा (2) सत्य की जीत।

(1) ईमानदार दारोगा–यह शीर्षक भ्रष्टाचार के वातावरण में ईमानदारी के महत्त्व को रेखांकित करता है, क्योंकि वंशीधर दारोगा को एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। उसे अपनी ईमानदारी के कारण अपनी सरकारी नौकरी से जहाँ हाथ धोना पड़ता है, वहीं उसे ईमानदारी के कारण ही मैनेजर पद भी प्राप्त होता है।

(2) सत्य की जीत–यह शीर्षक भी कहानी के मूल उद्देश्य से जुड़ा हुआ है, क्योंकि अपनी ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा के कारण वंशीधर को कहानी के आदि से मध्य तक सत्य के पथ पर चलते हुए अत्यधिक संघर्ष करना पड़ता है। अन्त में उसी की जीत होती है।

प्रश्न 6. कहानी के अन्त में अलोपीदीन के वंशीधर को मैनेजर नियुक्त करने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए। आप इस कहानी का अन्त किस प्रकार करते?

उत्तर–कहानी के अन्त में अलोपीदीन वंशीधर को अपनी सम्पत्ति का स्थायी मैनेजर बना देते हैं। इस नियुक्ति के पीछे कई कारण हो सकते हैं, क्योंकि पं. अलोपीदीन स्वयं भ्रष्ट था, इसलिए उसे दूसरों पर विश्वास नहीं था, फिर उसका सम्पर्क भी बेईमान और भ्रष्ट लोगों से ही था। उनसे मिलकर वह अपने धन के बल पर सभी कार्य सिद्ध कर लेता था। केवल वंशीधर ही ऐसा व्यक्ति उसे मिला था जिसने उसे अपनी ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा से प्रभावित किया था। उसे अपनी सम्पत्ति की सुरक्षा और व्यवस्था के लिए वंशीधर जैसे ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ और दृढ़ चरित्र वाले व्यक्ति की जरूरत थी। इसीलिए उसने वंशीधर को नियुक्त किया। मैं इस कहानी का अन्त भी कुछ इसी प्रकार करता, क्योंकि 'असत्य पर सत्य की जीत' कहानी का यह अन्त पूर्णतः उपयुक्त है।

पाठ के आस-पास–

प्रश्न 1. दारोगा वंशीधर गैर कानूनी कार्यों की वजह से पंडित अलोपीदीन को गिरफ्तार करता है, लेकिन कहानी के अन्त में इसी पंडित अलोपीदीन की सहृदयता पर मुग्ध होकर उसके यहाँ मैनेजर की नौकरी को तैयार हो जाता है। आपके विचार से वंशीधर का ऐसा करना उचित था? आप उसकी जगह होते तो क्या करते?

उत्तर–पं. अलोपीदीन एक भ्रष्ट व्यापारी था। ऐसे भ्रष्ट व्यापारी के यहाँ एक ईमानदार, चरित्रवान और कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति का नौकरी करने को तैयार हो जाना मेरी दृष्टि से सर्वथा अनुचित है। क्योंकि जो व्यक्ति जैसे व्यक्ति के साथ या पास रहता है, लोग उसे भी वैसा ही समझने लगते हैं। इसलिए यदि मैं वंशीधर की जगह पर होता तो उसकी नौकरी स्वीकार नहीं करता। मैं उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए स्पष्ट कह देता कि आपके काले धन्धों को सहन करना मेरे स्वभाव के प्रतिकूल है। यह मेरे वश की बात नहीं है। अतः आप इस पद के लिए किसी अन्य व्यक्ति की खोज कर लें, यही उपयुक्त रहेगा।

प्रश्न 2. नमक विभाग के दारोगा पद के लिए बड़ों-बड़ों का जी ललचाता था। वर्तमान समाज में ऐसा कौन-सा पद होगा जिसे पाने के लिए लोग लालायित रहते होंगे और क्यों?

उत्तर–वर्तमान समाज में एक नहीं, ऐसे कई पद हैं जिनमें ऊपरी आय के कारण अधिकांश लोग नियुक्ति चाहते हैं। जैसे आयकर, बिक्रीकर, पुलिस, आयात-निर्यात विभाग आदि के कार्यालय। क्योंकि इन कार्यालयों में ऊपरी आय सहजता से हो जाती है और आज भ्रष्टाचार बढ़ने से यह गलत धारणा चल रही है।

प्रश्न 3. अपने अनुभवों के आधार पर बताइए कि जब आपके तर्कों ने आपके भ्रम को पुष्ट किया हो।

उत्तर–हमारे मन में जब किसी विषय के बारे में भ्रम उत्पन्न हो जाता है तो हमारा मन उस विषय के सम्बन्ध में स्वयं तर्क-वितर्क करने लगता है और मन उस विषय से सम्बन्धित भ्रम को दूर करने में लग जाता है। इसी क्रम में मुझे बड़ी-बड़ी बातें करने वाले लोगों को देखकर भ्रम होता है। जब भी मैं अपने एक सफेद-पोशी घनिष्ठ मित्र से मिलता था तो उसकी बड़ी-बड़ी आदर्शवादी बातों को सुनकर लगता था कि इसके मन में शोषण को दूर करने के प्रबल भाव भरे हुए हैं और यह प्रयासरत भी है, लेकिन नजदीक में देखने पर लगा कि वह स्वयं ही स्वार्थी और शोषक है। उसकी कथनी और करनी में जमीन-आसमान का अन्तर है। उसकी सारी बातें कोरा दिखावा है। इस प्रकार मेरे तर्कों ने मेरे मन के भ्रम को पुष्ट किया।

प्रश्न 4. पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया। वृद्ध मुंशीजी द्वारा यह बात एक विशिष्ट संदर्भ में कही गई थी। अपने निजी अनुभवों के आधार पर बताइए–

(क) जब आपको पढ़ना-लिखना व्यर्थ लगा हो।

(ख) जब आपको पढ़ना-लिखना सार्थक लगा हो।

(ग) 'पढ़ना-लिखना' को किस अर्थ में प्रयुक्त किया गया होगा : साक्षरता अथवा शिक्षा? (क्या आप इन दोनों को समान मानते हैं?)

उत्तर–(क) एक बार रेलवे स्टेशन पर एक एडवोकेट ने कुली के साथ ऐसा दुर्व्यवहार किया कि उसे देखकर मुझे उसका पढ़ना-लिखना सब व्यर्थ लगा।